announcing
the madhya pradesh
rang mandal

प्रस्तुत कर रहे हैं मध्यप्रदेश रंगमंडल

Theatre as a way of life

The Madhya Pradesh Rang Mandal, the third Hindi repertory theatre in the country (the other two being located in Delhi), is also the first of its kind. By giving the regional theatre here a security it previously lacked, the Rang Mandal aims at creating a sustained theatre movement as a way of life rather than a sporadic activity. From one viable repertory, it is hoped, will spring a series of similar theatres all over the country, which are at once local, and, have a deep vision of the world.

The Rang Mandal is really a continuation of the theatre movement already existing in Madhya Pradesh and hopes to become part of the creative process that has always existed between theatre and the people. By combining indigenous tradition with contemporary sensibility, it will link the past to the present and forwards to a fuller future. By acquiring the right technical and stylistic virtuosity, then, amateur theatre will grow to the stature of committed professionalism.

रंगकर्म को सुरक्षा

मध्यप्रदेश रंगमंडल, राष्ट्रीय नाट्य विद्यालय और श्री राम सेंटर रंगमंडल के बाद देश का तीसरा हिंदी रंगमंडल है। किसी भी प्रदेश शासन द्वारा रंगमंडल का गठन अविश्वसनीय बात होगी किन्तु मध्यप्रदेश रंगमंडल की सफलता अन्य प्रदेशों द्वारा अपने रंगमंडल स्थापित करने के लिए दिशा संकेत हो सकता है। जिससे रंगकर्म को सुरक्षा मिल सके जो पूर्व में कभी नहीं मिली।

१ अगस्त १९८१ को अपने गठन के बाद रंगमंडल ने अब तक चार अभ्यास प्रस्तुतियाँ — व्यायाम, रुपसज्जा, देह समूहन, मार्शल आर्ट तथा एक नाटक 'चतुर्भाणी' प्रदर्शित किया है। इसके अतिरिक्त नाट्य लेखन शिबिर और मनोशारीरिक प्रशिक्षण पर भी शिबिर सम्पन्न हुए है।

◀ Movement class

On the cover: Production of 'Chaturbhani'

Madhya Pradesh Rang Mandal
Madhya Pradesh Kala Parishad
Tagore Marg, Bhopal

मध्यप्रदेश रंगमंडल,
मध्यप्रदेश कला परिशद,
टागोर मार्ग, भोपाल

Rang Mandal
Madhya Pradesh

Activities of the Rang Mandal

The Rang Mandal's programme for the year will comprise major productions as well as a number of 'fringe' or smaller ones. Of these major productions, one will be an original play in Hindi, one in any other Indian language, one an Indian classical play, and one play from outside the country.

Since its inception, on Aug. 1, 1981, the repertory has organised classes in make-up and movement, a playwrights workshop, workshops in physical/intellectual training and in the martial arts, and has staged a classical Sanskrit play, *Chaturbhani*.

The Rang Mandal is part of a larger complex, the elegant Bharat Bhavan that graces the shores of a serene lake. It is designed by architect Charles Correa. This complex, besides housing the modern art gallery that has folk and tribal sections, will also have a music and poetry library and two fully equipped auditoria, 'Antarang' and 'Bahirang'. 'Bahirang', laid out against the lake and the cascading mountains, seems the perfect environmental theatre. It can seat 500. 'Antarang', an indoor theatre has a thrust stage, and a seating capacity of 250.

भविष्य के कार्यक्रम

रंगमंडल की अगली प्रस्तुतियाँ भोपाल में बडे ताल के किनारे स्थापित हो रहे सांस्कृतिक केंद्र भारत भवन के उदघाटन से जुडी हुई है। देश में अकेले अपने ढंग के इस केंद्र में आधुनिक व लोककला संग्रहालय संगीत तथा कविता पुस्तकालय के अलावा दो रंगशालाएं, अंतरंग व बहिरंग, भी होगी। बहिरंग की पृष्ठभूमि में भोपाल का बडा तालाब और दूर ओझल होते हुए पहाड है और इसमें ५०० दर्शक समा सकते हैं। बहिरंग के मंच में व्यापक होने के पूरे गुण है जिस पर रंगगतियां और समूहन नये-नये रुपाकारों में प्रवाहीत हो सकें। अंतरंग अग्र विस्तारित (थ्रस्ट) मंच है। इसमें २५० दर्शकों के बैठने की व्यवस्था है। रंगमंडल की आगामी गतिविधियां इन दोनों रंगशालाओं से जुडी हुई है। जिन पर अभिनेता और निर्देशक अपनी-अपनी क्षमता, शिल्प, विशेषता और कलात्मन उत्कर्ष को विकसित और समृद्ध करेंगे।

Make-up class

What We Believe In

- The Rang Mandal wants to create a sustained theatre movement that becomes a way of life rather than a sporadic activity.
- It believes that indigenous traditions must be juxtaposed with a contemporary sensibility, thus linking the past to the present leading to a fuller future.
- It believes that the temperament and complexion of theatre should be local but with a deep vision of the world.
- The Rang Mandal feels committed not only to do plays written in Hindi but significant plays written in any Indian language as well as plays from world literature.
- It wishes to function not only as a theatre company but hopes to inculcate a deeper and total sense of theatre in its members so that they can go back to their various areas to impart and train a sustained consciousness of theatre.
- The M. P. Rang Mandal does not believe in chauvinistic attitudes towards literary Hindi but also wants to use the colloquial flavour and dialect.
- Though located in Bhopal, it plans to hold workshops in various parts of Madhya Pradesh and travel to various villages and small towns.
- The Rang Mandal believes in the aesthetic balance between popular theatre and experimentation.
- It accepts the proscenium form of theatre but feels the limitations of this confinement and wants to release theatre from these confines, take it to the parks, the lakeside, the mountain slopes, courtyards, buildings street corners—any of these could well serve as stage.
- The Rang Mandal believes in developing in the actor a sense of history and perception of world theatre and his significance in this totality.
- The photographic and critical documentation of all works should be an imperative aspect of theatre activity so that a genuine perspective can be created.
- The Rang Mandal hopes to inculcate in its members an awareness and understanding not only of their own tradition but also of theatre traditions existing in Asia and in the world.
- To use a cliche, theatre is "a marriage of all the arts"; in theatre the borders between the arts blur. We hope to make our members deeply aware of other media of expression in a real and vital way so that their own experience is that much more intense.

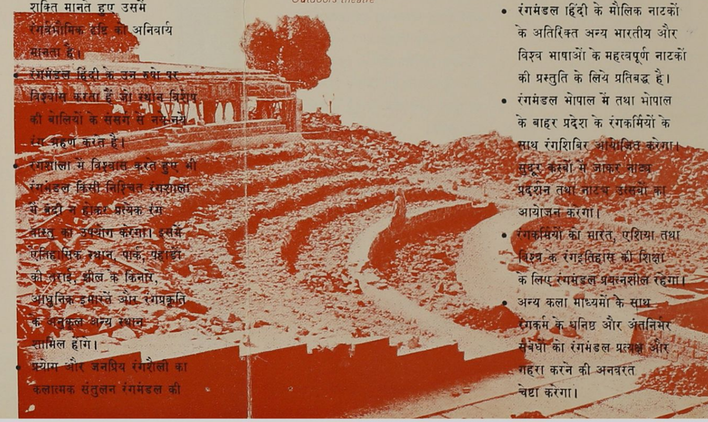

Outdoors theatre

हमारी मान्यताएँ

मध्यप्रदेश रंगमंडल प्रदेश के रंग आंदोलन की जीवंत निरंतरता का प्रतीक है और इसका उद्देश्य दर्शक तथा रंगमंच के बीच होनेवाले रचनात्मक आदान प्रदान में अपने को समाहित करना होगा। रंगमंडल का उद्देश्य प्रमाणित उत्साह से भेर रंग आंदोलन को शिल्प तकनीक की दक्षता से लैस करना भी होगा जिससे शौकिया रंगमंच प्रस्तुति के स्तर पर प्रोफेशनल हो सके।

- मध्यप्रदेश रंगमंडल निरंतर रियाज में विश्वास करता है जिससे रंग कर्ता संपूर्ण रंगानुभव के भागीदार हों और सृजन के एकदम नये आयामों की तलाश हो सके।
- रंगमंडल का लक्ष्य रंग हलचल नहीं रंग आंदोलन है जो पूरे वातावरण से अपने को जोड सके।
- जनप्रिय रंगशैलियों का समकालीन भवबोध के साथ उपयोग करने के लिये रंगमंडल प्रतिबद्ध है।
- रंगमंडल स्थानीयता को रंगमंच की शक्ति मानते हुए उसमें रंगवैश्विक दृष्टि को अनिवार्य मानता है।
- रंगमंडल हिंदी के उन रुपों पर विश्वास करता हैं जो स्थान विशेष की बोलियों के संसर्ग से नये-नये रंग ग्रहण करते है।
- रंगशाला में विश्वास करते हुए भी रंगमंडल किसी निश्चित रंगशाला में बंदी न होकर प्रत्येक रंग वास्तु का उपयोग करेगा। इसमें ऐतिहासिक स्थान, पार्क, पहाडों की तराई, झील के किनारे, आधुनिक इमारतें और रंगप्रकृति के अनुकूल अन्य स्थान शामिल होंगे।
- प्रयोग और जनप्रिय रंगशैली का कलात्मक संतुलन रंगमंडल की महत्वपूर्ण चिंता है।
- रंगमंडल एक ऐसी शिक्षण शाला होना चाहता है जिससे इसके सदस्य रंग प्रशिक्षण की क्षमता हासिल करें और समूचे प्रदेश में रंग प्रशिक्षण का अभियान सघन रुप से चलाया जा सके।
- रंगमंडल मानता है कि अभिनेता में अभिनय के अतिरिक्त रसास्वादन, अपने माध्यम का इतिहास बोध तथा आलोचनात्मक शक्ति का विकास अनिवार्य है।
- प्रदेश में हो रहे रंगकर्म का प्रामाणिक साक्ष्य लेख रंगमंडल आवश्यक मानता है जिससे संपूर्ण दृश्य का पता लग सकें।
- रंगमंडल हिंदी के मौलिक नाटकों के अतिरिक्त अन्य भारतीय और विश्व भाषाओं के महत्वपूर्ण नाटकों की प्रस्तुति के लिये प्रतिबद्ध है।
- रंगमंडल भोपाल में तथा भोपाल के बाहर प्रदेश के रंगकर्मियों के साथ रंगशिबिर आयोजित करेगा। सुदूर कस्बों में जाकर नाट्य प्रदर्शन तथा नाट्य उत्सवों का आयोजन करेगा।
- रंगकर्मियों को भारत, एशिया तथा विश्व के रंगइतिहास की शिक्षा के लिए रंगमंडल प्रयत्नशील रहेगा।
- अन्य कला माध्यमों के साथ रंगकर्म के घनिष्ठ और अंतनिर्भर संबंधों को रंगमंडल प्रत्यक्ष और गहरा करने की अनवरत चेष्टा करेगा।